संदेश पाँच

दुल्हन की धार्मिकता

पवित्रशास्त्र पठन: प्रक. 19:7-9; मत. 5:20; 6:33; 22:2; 2 कुर. 5:21; 1 यूह. 1:7, 9; प्रक. 15:3

I. परमेश्वर की धार्मिकता वह है जो परमेश्वर न्याय और धार्मिकता के संबंध में अपने क्रिया में है—प्रक. 15:3; रो. 1:16ब-17अ; यूह. 3:16; 1 यूह. 1:9:

A. मसीह का हमारा अनुभव परमेश्वर की धार्मिकता की नींव पर टिका है।

B. नींव परमेश्वर की धार्मिकता है, जो परमेश्वर के सिंहासन की अडिग नींव है—भज. 89:14।

II. धार्मिकता की परिभाषा के चार पहलू हैं:

A. धार्मिकता का अर्थ है परमेश्वर के सामने व्यक्तियों, वस्तुओं और मामलों के साथ उसकी धर्मी और सख्त आवश्यकताओं के अनुसार सही होना—मत. 5:20।

B. धार्मिकता मसीह की बाहरी अभिव्यक्ति है जो आत्मा के रूप में हमारे अंदर रहता है—2 कुर. 3:8-9:

1. यह परमेश्वर के स्वरूप के रूप में धार्मिकता है—इफ. 4:24; कुल. 3:10।
2. धार्मिकता की सेवकाई प्रभु के स्वरूप की सेवकाई है—2 कुर. 3:9।

C. धार्मिकता परमेश्वर के राज्य का मामला है—मत. 6:33; भज. 89:14:

1. परमेश्वर का राज्य धार्मिकता है।
2. धार्मिकता परमेश्वर की सरकार, प्रशासन और शासन से संबंधित है।

D. धार्मिकता हमारे अस्तित्व में परमेश्वर के साथ सही होने का मामला है—2 कुर. 5:21:

1. हमारे अस्तित्व में परमेश्वर के साथ सही होने का अर्थ है एक ऐसा आंतरिक अस्तित्व होना जो पारदर्शी और क्रिस्टल स्पष्ट हो, एक ऐसा आंतरिक अस्तित्व जो परमेश्वर के मन और इच्छा में हो।
2. यह मसीह में परमेश्वर की धार्मिकता होने का मामला है—आ. 21।

III. धार्मिकता परमेश्वर के बाहरी कर्मों, तरीकों, कार्यों और गतिविधियों से संबंधित है—प्रक. 15:3:

A. परमेश्वर जो कुछ भी करता है वह धार्मिक है—रो. 1:16-17।

B. परमेश्वर अपने न्याय और धार्मिकता में जो कुछ भी है, वह उसकी धार्मिकता है।

IV. परमेश्वर अपने पुत्र यीशु के लहू में धर्मी है—1 यूह. 1:7, 9:

A. परमेश्वर अपने वचन में विश्वासयोग्य है (आ. 10) और अपने पुत्र यीशु के लहू में धर्मी है।

B. उसका वचन उसके सुसमाचार के सत्य का वचन है (इफ. 1:13), जो हमें बताता है कि वह मसीह के कारण हमारे पापों को क्षमा करेगा (प्रे. 10:43); मसीह के लहू ने उसकी धर्मी माँगों को पूरा किया है कि वह हमारे पापों को क्षमा करे (मत. 26:28)।

C. हमें क्षमा करना हमें हमारे पापों के अपराध से मुक्त करना है, जबकि हमें शुद्ध करना हमें हमारे अधर्म के दाग से धोना है।

V. धार्मिकता परमेश्वर के राज्य से संबंधित है—रो. 14:17:

A. कलीसिया जीवन परमेश्वर का राज्य है, और परमेश्वर का राज्य धार्मिकता है।

B. परमेश्वर का सिंहासन धार्मिकता की नींव पर स्थापित है—भज. 89:14।

C. जहाँ परमेश्वर की धार्मिकता है, वहाँ उसका राज्य भी है—यश. 32:1; इब्र. 1:8-9।

D. पुराने नियम में, धार्मिकता अक्सर राज्य का पर्यायवाची है।

E. जहाँ धार्मिकता है, वहाँ सब कुछ उचित तरीके से आगे बढ़ता है; यही राज्य है।

F. धार्मिकता पहले परमेश्वर के स्वरूप में परिणत होती है, और फिर धार्मिकता परमेश्वर के राज्य की स्थापना करती है:

1. रोमियों 8 में हमारे पास धार्मिकता और परमेश्वर का स्वरूप है।
2. रोमियों 14 में हमारे पास धार्मिकता और परमेश्वर का राज्य है।
3. स्वरूप और राज्य दोनों धार्मिकता पर आधारित हैं।

G. यह कहना कि धार्मिकता नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में निवास करेगी (2 पत. 3:13) इसका अर्थ है कि सब कुछ व्यवस्थित, सिरोमणित और विनियमित होगा:

1. सब कुछ शासित, नियंत्रित और उचित नियम के अधीन होगा, क्योंकि परमेश्वर का सिंहासन, राज्य, दिव्य प्रशासन, वहाँ होगा।
2. परिणाम शांति और आनंद होगा।

VI. प्रकाशितवाक्य 19:7-8 में हम दुल्हन की धार्मिकता देखते हैं:

A. मसीह के विश्वासियों के लिए धार्मिकता होने के दो पहलू हैं:

1. पहला पहलू विश्वासियों की धार्मिकता होना है ताकि वे परमेश्वर के सामने उनके मन फिराने और मसीह में विश्वास करने के समय वस्तूपरक रूप से धर्मी ठहरें—रो. 3:24-26; प्रे. 13:39; गल. 1:1-2 3:24ब, 27।
2. दूसरा पहलू यह है कि विश्वासियों की धार्मिकता उनके द्वारा परमेश्वर की अभिव्यक्ति के रूप में जी जाए, जो मसीह में विश्वासियों को दी गई धार्मिकता है ताकि वे परमेश्वर द्वारा व्यक्तिपरक रूप से धर्मी ठहराए जाएँ—रो. 4:25; 1 पतरस 2:24अ; याक. 2:24; मर. 5:20; प्रक. 19:8।
3. हमारी वस्तूपरक धार्मिकता के रूप में, मसीह ही वह जन है जिसमें हम परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराए जाते हैं—रो. 3:24, 28; 4:25; 5:1, 9, 16, 18।
4. हमारी व्यक्तिपरक धार्मिकता के रूप में, मसीह ही वह जन है जो हमारे लिए ऐसा जीवन जीने के लिए हमारे अंदर निवास करता है जिसे परमेश्वर द्वारा धर्मी ठहराया जा सकता है और जो परमेश्वर को हमेशा स्वीकार्य है—मत. 5:6, 20।

B. मसीह संतों में से जीया क्योंकि उनकी व्यक्तिपरक धार्मिकता उनका विवाह का वस्त्र बन जाती है—प्रक. 19:8:

1. हमारे उद्धार के लिए हमें जो धार्मिकता मिली है, वह वस्तूपरक है और हमें धर्मी परमेश्वर की माँग को पूरा करने में सक्षम बनाती है, जबकि जयवन्त होते संतों की धार्मिकता व्यक्तिपरक है और उन्हें जयवन्त मसीह की माँग को पूरा करने में सक्षम बनाती है—1 कुर. 1:30; फिलि. 3:9।
2. मत्ती 22:11-12 में विवाह का वस्त्र मसीह को दर्शाता है जिसे हम जीते हैं और जो हमारे दैनिक जीवन में हमारी श्रेष्ठ धार्मिकता के रूप में हमारे माध्यम से व्यक्त होता है—5:20; प्रक. 3:4-5, 18।

C. प्रभु की दुल्हन, उसकी पत्नी, ने "अपने आप को तैयार कर लिया है। और उसे यह दिया गया है कि वह महीन मलमल, चमकदार और स्वच्छ वस्त्र पहने; क्योंकि महीन मलमल संतों की धार्मिकता है"—19:7ब-8:

1. प्रकाशितवाक्य 19:8 स्पष्ट रूप से वस्त्र को धार्मिकता से जोड़ता है।
2. आयत 8 में *धर्मिकताएं* शब्द बहुवचन है और इसका अनुवाद "धर्मी कर्म" के रूप में किया जा सकता है।
3. धार्मिकता मसीह को हमारी धार्मिकता के रूप में संदर्भित नहीं करती है, जिसे हमने अपने उद्धार के लिए प्राप्त किया है—1 कुर. 1:30।
4. महीन मलमल हमारे जयवन्त होते जीवन, हमारे जयवन्त होते रहन-सहन को इंगित करता है।
5. महीन मलमल मसीह है जिसे हम अपने अस्तित्व से जीते हैं।

D. "धन्य हैं वे [जयवन्त होते संत] जो मेमने के विवाह भोज में बुलाए गए हैं"—प्रक. 19:9:

1. यहाँ मेमने का विवाह भोज मत्ती 22:2 में परिणय भोज है।
2. मसीह के विवाह भोज में बुलाए जाने का अर्थ है धन्य होना।
3. जयवन्त होते विश्वासी, जिन्हें मेमने के विवाह भोज में बुलाया जाएगा, वे मेमने की दुल्हन भी होंगे—प्रक. 19:7।